रात्रि क्लास 26/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

बच्चों ने अनुभव सुनाया। कोई को अनुभव होता है। अनुभव सुनाने की प्रैक्टिस अच्छी रहती है। पढ़े–लिखे भी होते हैं और यह है सभी का नया अनुभव। भक्तिमार्ग तो आधा कल्प से चला आया है। उनको नया अनुभव नहीं कह सकते। वेद–शास्त्र, महाभारत आदि यही चीज़ें हैं। यह नॉलेज तो है नहीं। जन्म–जन्मांतर भक्तिमार्ग के शास्त्र तो पढ़े। यह है बिल्कुल नई बात। भक्ति से बिल्कुल न्यारी बातें हैं। बच्चों को सभी चित्रों आदि का (ज्ञान) मिल गया है। तुम्हारा युग ही अलग है। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग और यह है ब्राह्मण कुल। आगे तो पता भी नहीं। वह ब्राह्मण भी नहीं जानते जो कुखवंशावली हैं। कुख वंशावली और मुख वंशावली का भी वर्णन है; परन्तु राइट बातें सुना न सकेंगे। वह सभी हैं अनराइटियस। वहाँ है सभी राइटियस। राइटियस राज्य, राइटियस धर्म भी कहेंगे। सभी राइटियस ही चलते हैं। राइटियस और अनराइटियस आधा–आधा है। राइटियस सतयुग से शुरू होकर त्रेता अंत तक चलता है। फिर अनराइटियस हो पड़ते। तुम अभी दोनों के कॉन्ट्रास्ट को जान गये हो। इन बातों को न कलियुगी मनुष्य, न सतयुगी (जान) सकते हैं। पुरुषोत्तम संगमयुगी ही कॉन्ट्रास्ट कर सकते हैं। यह पढ़ाई है ना; परन्तु आदत पड़ी हुई है तो मुरली–2 कहते रहते हो। तुमको मुरली आई है। मुरली पढ़ी है? मुरली नाम कृष्ण का उठा लिया है। अभी इनको क्या कहें? फलाने दिन की वाणी आई है। वाणी अक्षर ठीक है। मुरली अक्षर निकल जाना चाहिए। नहीं तो फिर कृष्ण की मुरली याद आवेगा। वाणी इस पोलार से निकलती है; इसलिए आकाशवाणी कहते हैं। आकाश तत्व है ना। आकाश तत्व से वाणी निकलती है। पोलार है ना। (मुरली शब्द मीठा है) आगे चल कर चेंज भी हो सकता है। अभी तो बच्चे समझते हैं जो कुछ सुनते, समझते हैं ड्रामा। वह हद का, यह बेहद का। बाप को कहा जाता है नॉलेजफुल। जानी–जाननहार नाम सुना है तो समझते हैं सभी के दिलों को जानने वाला है। अच्छा, उससे फायदा क्या? वह सभी बातें सीखते हैं। दो पैसे मिल जाती है। कमाई का रास्ता है। अभी तुम जो बाप से पढ़ते हो यह कमाई इस दुनियां के नहीं है। यह राजयोग तुम्हारा है भविष्य के लिए। नये–2 सुनकर मूंझ जाते हैं। कैसे हो सकता? पुरुषोत्तम संगमयुग का किसको भी पता नहीं है। भक्तिमार्ग में मनाते हैं सभी; परन्तु अर्थ रहित। अभी तुमको यथार्थ अर्थ समझाया जाता है। यथार्थ और अयथार्थ अभी तुमको पता पड़ता है जबकि यथार्थ बातें बताई जाती हैं। वह है भक्ति। बाप आकर समझाते हैं ज्ञान से दिन, भक्ति से रात। फिर वैराग्य किसका? रात का। फिर दिन आता है। भक्ति का वैराग्य। स्कूल में बच्चे पढ़ते हैं तो कोई बहुत बुद्धिवान होते हैं। उत्तम, मध्यम, कनिष्ट होते हैं ना। किसको बहुत थोड़ा समझ में आता, किसको कुछ भी नहीं। आवाज़ मीठा लगता है। अक्षर सुनते हैं फिर भूल जाते हैं। रिपीट नहीं कर सकते हैं। फिर कहते हैं पढ़े–लिखे नहीं हैं। बाप कहते हैं पढ़ा हुआ तो सभी भूल जाना है। यह नई पढ़ाई है। आत्मा को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाना है। बाप कहते हैं तूफान आते हैं डरो मत। कहते हैं बाबा, स्वप्न बहुत आते हैं। बाप कहते हैं सभी से जास्ती स्वप्न हमारे पास आते हैं। फर्स्ट मैं हूँ ना। यह सभी माया के तूफान हैं। स्वप्न तो अज्ञान काल में भी बहुत आते हैं। अभी तुम सच–मुच देवता बनते हो। जानते हो हम स्वर्ग़वासी थे। भारत स्वर्ग़ था। सिर्फ़ नाम लम्बा दे दिया है। बाप कहते हैं 5000 वर्ष की बात है, भारत स्वर्ग़ था। भारत की महिमा अपरमअपार है। तुम सुना सकते हो यह भारत 5000 वर्ष पहले स्वर्ग़ था, हेविन था। वह भी समझते हो भारत (में) गॉड–गॉडेज का राज्य था। भारत के लिए सभी की इज्जत है। जानते हैं हेविन था। अभी ग़रीब बन(ते) हैं तो मदद देते हैं। वह भी अपन की कमाई के लिए मदद देते हैं। तुम बच्चे अच्छी रीत जानते हो। फिर से स्थापना कर रहे हो वही स्वर्ग़ की। श्रीमत पर तुम श्रेष्ठ बनते हो। श्रीमत पर सारी सृष्टि श्रेष्ठ बनी है। तुम भी बनते हो; इसलिए स्वर्ग़ को श्रेष्ठ कहा जाता है। इनकी यह निशानी। तब ही बाबा कहते हैं प्रभातफेरी में भी यह दिखाओ। विश्व में शान्ति थी। एक राज्य, एक धर्म था। तुम जो एक्ट करते वह नहीं(ई) बात नहीं। अच्छा, ओम। बच्चों को गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।